

टीवी चैनल्स में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम

पीस ऑफ माइंड चैनल 24 घंटे

राष्ट्रीय सहारा समय : सुबह 6.55-7 बजे, दोप. 2.50-3 बजे
आस्था : रात्रि 7.10 से 7.40 बजे
जी-24 (छत्तीसगढ़): सुबह 5.30 से 6.00 बजे
जीटीवी (तमिल) : दोप. 2.30 बजे से 6 बजे (सोम. से शुक्र)
दीसा चैनल : सुबह 6.10 से 6.40

ईटीवी सुबह 5.00 से 5.30 (प्रतिदिन)

उ.प्र., म.प्र., बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, महाराष्ट्र

ईटीवी - उड़ीसा, कर्नाटक - सुबह 5.30-6.00 (प्रतिदिन)

BSNL IP TV (Divine Box)

Om Shanti Channel (24 Hours)

EASY Box (BoL) (प्रतिदिन)

सुबह 7 बजे से रात्रि 11 बजे तक

मो टीवी - तेलगु सुबह 5.30 बजे से 6.00 बजे तक

मो म्यूजिक - तेलगु सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक

भक्ति - तेलगु सुबह 10.00

विदेश - आस्था इंटरनेशनल में - यूके - 8.40 जीएमटी
यूएसए व कनाडा 8.40 ईब, यूके व यूएस स्टार सुबह 7-7.30

आबू चैनल के अंतर्गत आबू भक्ति 24 घंटे म्यूजिक चैनल

डिवाइन बाक्स के लिए सम्पर्क करें - 9414152296



सम्पूर्णता के लिए

तीव्र पुरुषार्थ

मन की बातें

गीता ज्ञान का
आध्यात्मिक रहस्य



कथा सरिता

(ओमशान्ति मीडिया में प्रकाशित कथा सरिता का संकलन)

हैपिनेस
इंडेक्स

पाठकों की विशेष मांग पर 'ओम शान्ति मीडिया' में निरंतर प्रकाशित हो रही शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह "कथा सरिता" तथा ब्र.कु.शिवानी की प्रवचनमाला का संग्रह "हैपिनेस इंडेक्स" अब संकलन के रूप में उपलब्ध है। इसे आप ओम शान्ति मीडिया, शान्तिवन के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न:- मैं जब योग करता हूँ तो पहले आत्मा का चिंतन करता हूँ अर्थात् आत्मभिमानि होने का अभ्यास करता हूँ, परन्तु जब शिव बाबा से योग लगाता हूँ तो यह तो याद ही नहीं रहता है कि मैं आत्मा हूँ। यह तो मिस हो जाता है। तो क्या करूँ जो दोनों एक साथ हो ?

उत्तर:- आप बिल्कुल ठीक योगाभ्यास करते हैं। जब हम शिव बाबा की याद में मन को मग्न करते हैं और उससे पूर्व आत्म स्मृति में रहते हैं तो शिव बाबा की याद में आत्मभिमानि स्थिति समाई होती है, फिर बार-बार हमें आत्म-स्मृति की आवश्यकता नहीं। यों भी एकाग्रता केवल एक पर ही होती है, दो पर नहीं। हमारा लक्ष्य आत्मभिमानि बनना भी है। आत्म-स्मृति व योगाभ्यास द्वारा धीरे-धीरे हम आत्मभिमानि बनते जायेंगे। हमें देह से न्यारे पन का अलग से भी अभ्यास करते रहना चाहिए।

प्रश्न:- मेरे बच्चे की शादी हुई है, बहुत समय से बहु का मुँह देखने की इच्छा थी। परन्तु बहु इतनी तेज तर्रार आई कि मुझे तो तंग ही कर दिया और वह ऐसा करती है कि लड़के का नाता माँ-बाप से बिल्कुल न रहे। जब से वो आई, घर में अशांति ही अशांति है। क्या करूँ ?

उत्तर:- आपको बहु का मुँह देखने की इच्छा थी सो पूर्ण हुई। अब आप शायद उसका मुँह देखना ही नहीं चाहती। कलियुग के अन्त में कई लड़कियां कुछ ज्यादा ही हाई-फाई हो गई हैं। उन्हें जीवन की लम्बी यात्रा में आने वाली कठिनाइयों का एहसास नहीं होता। उन्हें कहीं नहीं सिखाया जाता कि जीवन में मधुर सम्बन्धों का कितना महत्व है। उन्हें यह भी नहीं पता कि जो व्यवहार वह सास ससुर से कर रही है, वही व्यवहार उसे भी प्राप्त होगा। वह यदि बच्चे को माँ से अलग कर रही है तो भविष्य में उसे भी बच्चे का बिछोह सहना पड़ेगा। इसमें दोष उसकी माँ का भी है तो हमारी वर्तमान की सामाजिक व्यवस्था व शिक्षा का भी है।

आप अपने घर में 15 मिनट प्रतिदिन श्रेष्ठ वाइब्रेशन्स फैलाएं और बहु को आत्मिक दृष्टि से देखें। उसके व्यवहार को न देख उसे स्नेह दें। उसका अभिमान आपके स्वमान से ही समाप्त होगा। और हो सकता है पूर्व जन्म में आपने भी उससे वैसा ही व्यवहार किया हो, उसका रिटर्न हो रहा हो इसे स्वीकार

सद्भावना और... पृष्ठ 12 का शेष युवा प्रभाग की ब्र.कु.चंद्रिका, दांतीवड़ा कृषि विश्व विद्यालय के राजिस्टार एच.एन.खेर, इस्कोन गुजरात के वाइस प्रेसीडेंट सत्यकृतदासजी महाराज ने भी संबोधित किया और समर्पित होने वाली कन्याओं के प्रति अपनी शुभकामनायें व्यक्त की। भावनगर की ब्र.कु.तृप्ति ने कार्यक्रम का उद्देश्य बताया और मंच का

भी कर लें। बस जितना आपका चित्त शांत होगा, सब कुछ ठीक हो जायेगा।

प्रश्न:- बाबा ने हमें 2 मास का होमवर्क दिया है कि व्यर्थ संकल्प व व्यर्थ समय को कंट्रोल करो। हमें इसका सहज उपाय बतायें ?

उत्तर:- व्यर्थ संकल्पों में समय व शक्ति दोनों नष्ट होती है। मन भी भारी रहता है और ज्ञान भी विस्मृत हो जाता है। इसलिए व्यर्थ से मुक्त होने का दृढ़ संकल्प करें। कुछ लोग व्यर्थ की गपशप में भी घण्टों वेस्ट करते हैं, वे तो जीवन में सफल नहीं हो पायेंगे। बुद्धिमान मनुष्य को समय के महत्व को समझना ही चाहिए। व्यर्थ सुनने में समय वेस्ट करने से व्यर्थ संकल्प भी ज्यादा चलते हैं। अतः व्यर्थ सुनने, देखने व बोलने से मुक्त होने की प्रतिज्ञा करें।



मन
की
बातें

- ब.कु.सूर्य

याद रख व्यर्थ से मुक्त आत्माएँ ही निकट भविष्य में महान कार्य करेंगी। लक्ष्य बनायें - कोई भी बात हो उसे जल्दी से जल्दी समाप्त करें। बातों को बढ़ायें नहीं, इससे मन अशांत होगा।

मन को प्रतिदिन कुछ अभ्यास दें और उसे दिन में 25 बार अवश्य याद करें, जैसे - मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ, चमकती मणी हूँ, एक दिन यह अभ्यास करें। 7 दिन के 7 अभ्यास निश्चित करें, मन स्वतः ही व्यर्थ से मुक्त रहेगा।

तीसरी बात - ड्रामा के ज्ञान को यूज करके मन को शांत रखें। साथ-साथ रूहानी नशे या खुशी देने वाला कोई भी महावाक्य प्रतिदिन याद रखें। इससे स्वतः ही मन व्यर्थ से मुक्त रहेगा।

प्रश्न:- ब्रह्मा बाबा सदा बेफ्रिक रहे और फरिश्ते बन गये। हमने उन्हें देखा नहीं और न ही कोई मुझे उनके बारे में ज्यादा बताता है। हमें उनके कुछ दृष्टांत बताइये जिससे हम उनकी बेगमपुर के बादशाही की स्थिति से प्रेरणा ले सकें ?

उत्तर:- प्रारंभ से ही अर्थात् जब से शिव बाबा ने उनके द्वारा रूद्र यज्ञ की स्थापना की और पवित्र बनने का आदेश दिया, लोगों ने उनका विरोध प्रारंभ किया, उनके बारे में न कहे जाने वाले कितने

कुशल संचालन आंबावाड़ी की ब्र.कु.शारदाने किया।

इस अवसर पर महेसाना के टहूको पार्टी प्लोट में विशिष्ट व्यक्तियों के लिए "सेलिब्रेटिंग लाईफ विद हैपिनेस" विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार को मुम्बई के ब्र.कु.स्वामीनाथन ने संबोधित करते हुए जीवन में खुश रहने के अनेक तरीकों को

बोल बोले। सोचो तब वे अकेले थे, उनके साथ जो माताएं बहनें आई उनके कारण भी उन्हें बहुत कुछ सुनना पड़ा परंतु वे सदा नारायणी नशे में रहते थे कि मुझे तो नारायण पद पाना है और इस निश्चय से मस्त रहते थे कि जिसने यज्ञ रचा है वही जिम्मेदार है।

गंभीरता से सोचने का विषय है वि। एक समय ऐसा भी आया जब यज्ञ में सब कुछ खत्म हो गया। 380 मनुष्यों का पालना का बोझ उन पर था। यज्ञ खाली हो गया था, सब कुछ बेचना पड़ा था, कहीं से धन आने का कोई रास्ता भी नहीं था। यज्ञ वत्स यज्ञ छोड़कर जाने लगे। यह कितनी बड़ी परीक्षा थी। परन्तु बाबा की स्थिति अचल अडोल थी। वे कहते थे.. शिव बाबा परीक्षा ले रहा है, वह अपने बच्चों को भूखा नहीं रखेगा। एक बल एक भरोसे रहने के कारण वे बेफ्रिक रहे।

सम्पूर्ण यज्ञ की जिम्मेदारी उन पर थी। हर परिस्थिति का समाधान भी उन्हें ही करना था, परंतु निमित्त भाव व निर्माण भाव होने के कारण वे अति सहज रहते थे। उन सबसे बड़ी बात यह थी कि वे अधिक समय योग-युक्त रहते थे वे महान तपस्वी थे, उनमें अथाह आत्म बल था, स्वयं भगवान उनके रथ पर सवार थे, इसलिए वे बने बेफ्रिक बादशाह बनकर रहे।

प्रश्न:- बाबा ने कहा कि चलते-फिरते स्वराज्य अधिकारी बनकर रहो। इसका अभ्यास कैसे करें ?

उत्तर:- सारा दिन हम आत्मा देह के द्वारा ही कर्म करते हैं। बस आत्मा व देह के न्यारेपन को अनुभव करते रहे। यह देह अलग है व मैं आत्मा अलग हूँ, इस देह की मालिक हूँ, इससे कर्म करा रही हूँ, आँखों द्वारा देख रही हूँ - यह अभ्यास करें।

मैं आत्मा मन-बुद्धि संस्कारों की मालिक हूँ व कर्मइन्द्रियों की भी मालिक हूँ तो कर्म क्षेत्र पर मन भटके नहीं, दृष्टि इधर-उधर न जाएं, बुद्धि का लगाव कहीं न हो, कर्मइन्द्रियां कंट्रोल में रहे - यह ध्यान रखने से सहज ही स्वराज्यधिकारी बन जायेंगे। यह नशा रहे कि मैं आत्मा राजा हूँ। मेरी आज्ञा के बिना कर्मइन्द्रियां कोई काम नहीं करेगी। मुख से गलत नहीं बोल सकता। कान गलत नहीं सुन सकते। यह ध्यान रखना ही स्वराज्याधिकारी बनना है।

बताया जिसे अपनाकर व्यक्ति खुशामय जीवन व्यतीत कर सकता है। इस कार्यक्रम को दादी हृदयमोहिनी, सहकारी ने ता नटवरलाला पी.पटेल, ओ.एन.जी.सी. के पूर्व निदेशक राम अवतार, ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा ब्र.कु.मोहिनी, ब्र.कु.मुन्नी ने भी संबोधित किया।।